भारत-चीन सीमा विवाद: हिमालयी गतिरोध, भारत की विदेश नीति और इसके प्रभावों का एक अध्ययन

*शाहबाज अली

सारांश

भारत-चीन सीमा विवाद एक जटिल और ऐतिहासिक संघर्ष है, जो दोनों देशों के बीच भौगोलिक, राजनीतिक और रणनीतिक मतभेदों का परिणाम है। भारत और चीन के बीच क़रीब 3,488 किलोमीटर लंबी सीमा है, जो बहुत से विवादित क्षेत्रों से होकर गुजरती है। भारत-चीन सीमा विवाद एक लंबे समय से चला आ रहा भू-राजनीतिक और सुरक्षा मुद्दा है, जो ऐतिहासिक कारण,सीमाओं और भौगोलिक विवाद से जटिल हो गया है।

"हाल के वर्षों में चीन-भारत संबंधों में सुधार हुआ है, लेकिन यह सौहार्द और प्रतिस्पर्धा के दौर के बीच उतार-चढ़ाव जारी रखता है। यह दोनों देशों के बीच खतरे की धारणाओं के बीच बुनियादी बेमेल के कारण और भी बढ़ गया है, जिसकी जड़ शक्ति के संतुलन में बदलाव और द्विपक्षीय संबंधों में विरोधाभासी संकेतों में निहित है। इसके अलावा, दोनों देशों के प्रमुख शक्तियों के रूप में उभरने से उन्हें एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए नए उपकरण और मंच मिले हैं, जिससे द्विपक्षीय से क्षेत्रीय स्तरों तक चीन-भारत संबंधों का फैलाव हुआ है।"(बाजपाई;2023) "चीन-भारत संबंधों के विकास को रेखांकित करने के बाद भारत और चीन के बीच सीमा विवाद दशकों से एक जटिल और संवेदनशील मुद्दा रहा है। हिमालय क्षेत्र में सीमा विवाद ने दोनों देशों के बीच आपसी विश्वास को बार-बार प्रभावित किया है।("गोखले:2021) यह विवाद केवल भू-राजनीतिक महत्व तक ही सीमित नहीं है, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

हिमालयी क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले गतिरोध का समाधान न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। इस शोध में, हिमालयी क्षेत्र में भारत और चीन के बीच जारी सीमा विवाद के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है, जिसमें सीमा रेखा, सैन्य स्थिति, और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों पर उसके प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन में यह भी देखा गया है कि यह विवाद न केवल दक्षिण एशिया के सामरिक परिप्रेक्ष्य को प्रभावित करता है, बल्कि वैश्विक सुरक्षा और स्थिरता पर भी गंभीर असर डालता है। इस शोध में भारत-चीन के ऐतिहासिक कारणों ,प्रमुख संघर्षों के संदर्भ में दोनों देशों के विदेश नीति, सैन्य रणनीति और आर्थिक हितों का भी समग्र अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द: भारत-चीन, सीमा विवाद, भू-राजनीति, अक्साई चिन, अरुणाचल प्रदेश |

भारत-चीन सीमा विवाद का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

ब्रिटिश भारत और चीन के बीच सीमाओं को लेकर विवाद इस बात पर निर्भर करता था कि दोनों देशों ने अपने-अपने क्षेत्रीय हितों को कैसे परिभाषित किया। सीमाओं के निर्धारण में भूगोल, सामरिक जरूरतों का ध्यान रखा गया था, लेकिन स्पष्ट और स्थायी सीमाएं स्थापित नहीं की जा सकीं।

* Guest lecturer, Govt. V.Y.T. PG Autonomous College, Durg (C.G.)

1. *अक्साई चिन क्षेत्र* "अक्साई चिन लद्दाख के पूर्वी हिस्से में स्थित है। ब्रिटिश काल में, इस क्षेत्र की सीमा को लेकर स्पष्ट संधि नहीं थी। ब्रिटिश भारत ने 1865 में जॉनसन रेखा (Johnson Line) का प्रस्ताव रखा, जो अक्साई चिन को भारत का हिस्सा मानती थी। हालांकि, 1890 के दशक में ब्रिटिश सरकार ने मैकडॉनल्ड रेखा (Macartney-Macdonald Line) का प्रस्ताव दिया, जिसमें अक्साई चिन को चीन के अधीन दिखाया गया। स्वतंत्रता के बाद भारत ने जॉनसन रेखा को अपनाया, जबकि चीन ने मैकडॉनल्ड रेखा को स्वीकार किया।"(गोखले:2021)

2. *मैकमोहन रेखा (McMahon Line)"*यह रेखा 1914 में ब्रिटिश भारत और तिब्बत के बीच शिमला सम्मेलन में खींची गई थी। मैकमोहन रेखा में अरुणाचल प्रदेश के क्षेत्र को भारत का हिस्सा मानती है। चीन ने इस रेखा को कभी मान्यता नहीं दी और अरुणाचल प्रदेश को दक्षिण तिब्बत का हिस्सा मानता है।

3. *तिब्बत और चीन के साथ संबंध "*ब्रिटिश भारत ने तिब्बत को एक स्वायत्त क्षेत्र के रूप में माना और चीन की दावेदारी को औपचारिक रूप से मान्यता नहीं दी। 1914 के शिमला समझौते में तिब्बत को चीन का अधीनस्थ माना गया, लेकिन उसे आंतरिक स्वायत्तता दी गई।"(गोखले;2024)

हिमालयी गतिरोध और इसके प्रमुख संघर्ष व मुद्दे

हिमालयी क्षेत्र भारत और चीन के बीच एक भू-राजनीतिक और रणनीतिक संघर्ष का केंद्र बिंदु रहा है। यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सैन्य संबंधों को भी प्रभावित करता है। चीन और भारत के बीच चल रहे हिमालयी गतिरोध ने दोनों देशों के संबंधों में तनाव बढ़ाया है। यह संघर्ष विभिन्न क्षेत्रों जैसे सीमा विवाद, जल संसाधन, रणनीतिक हित और आर्थिक गतिविधियों से संबंधित है।

चीन के दृष्टिकोण से हिमालयी क्षेत्र में उसका प्रभुत्व स्थापित करना उसकी "स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स"(String of Pearls) रणनीति और वैश्विक शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा का हिस्सा है। चीन इस क्षेत्र को अपने भू-राजनीतिक विस्तार के लिए एक रणनीतिक बिंदु के रूप में देखता है। चीन का दावा है कि तिब्बत और उससे सटे हिमालयी क्षेत्र उसके ऐतिहासि अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

प्रमुख विवाद:

*सामरिक महत्व:"*हिमालयी क्षेत्र में भारत और चीन दोनों की सैन्य उपस्थिति बढ़ रही है। चीन ने तिब्बत क्षेत्र में बुनियादी ढांचे का तेजी से विकास किया है, जैसे सड़कें, रेलवे और सैन्य ठिकाने।"(बेदी;2021) इसके जवाब में भारत ने भी अपनी सीमाओं पर सैनिकों की तैनाती और बुनियादी ढांचे का निर्माण तेज कर दिया है।

अक्साई चिन: जम्मू-कश्मीर का यह क्षेत्र चीन के नियंत्रण में है, लेकिन यह भारत का अपन अभिन्न हिस्सा है।
अरुणाचल प्रदेश: चीन इसे "दक्षिण तिब्बत" मानता है और इस पर दावा करता है।

सिक्किम और लद्दाख: इन क्षेत्रों में भी सीमांकन को लेकर विवाद है। 1962 के भारत-चीन युद्ध का मुख्य कारण भी यही सीमा विवाद था।

*एलएसी (Line of Actual Control):"*चीन और भारत के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) स्पष्ट रूप से खींची नहीं है। यह अक्सर दोनों देशों की सेनाओं के बीच टकराव का कारण बनती है। 2020 में गलवान घाटी संघर्ष इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जहां हिंसक झड़प में दोनों पक्षों के सैनिक नुकसान होता है।"(बेदी;2021)

*तिब्बत का मुद्दा:*तिब्बत हिमालयी गतिरोध का एक प्रमुख कारक है। "1950 में चीन ने तिब्बत पर अधिकार कर लिया और इसे अपने क्षेत्र का हिस्सा घोषित कर दिया। भारत में निर्वासित तिब्बती सरकार और दलाई लामा की उपस्थिति चीन के लिए चिंता का विषय है। चीन इसे अपनी क्षेत्रीय संप्रभुता के लिए खतरा मानता है।"(शौरी;201).

जल संसाधन और ब्रह्मपुत्र नदी: हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली नदियाँ भारत और चीन दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। "ब्रह्मपुत्र नदी (जिसे चीन में यारलुंग त्संगपो कहा जाता है) पर चीन द्वारा बनाए जा रहे बांध भारत के लिए चिंता का बड़ा रही हैं। भारत का मानना है कि इन बांधों के माध्यम से चीन जल संसाधनों को कंट्रोल कर सकता है, जिससे उत्तर-पूर्वी भारत में जल समस्या पैदा हो सकता है।"(गोखले:2021)

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI): चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव हिमालयी क्षेत्र में तनाव का एक और कारण है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) पाक-अधिकृत कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है, जिसे भारत अपनी संप्रभुता का उल्लंघन मानता है। यह भारत-चीन संबंधों में एक और विवाद का कारण बनता है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारक: भारत और चीन के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। लेकिन चीन का तिब्बत पर कब्जा और भारत में तिब्बती शरणार्थियों की उपस्थिति ने इन संबंधों को जटिल बना दिया है।

सैन्य रणनीतियाँ और झड़पें: चीन ने "सैलामी स्लाइसिंग" (Salami Slicing) की रणनीति अपनाई है, जिसमें वह धीरे-धीरे भारत के क्षेत्र में घुसपैठ करता है। गलवान घाटी, पैंगोंग झील और अन्य स्थानों पर सैनिकों के बीच टकराव इसी रणनीति का हिस्सा हैं।

*चीन की कूटनीति:*चीन आक्रामक कूटनीति अपनाकर भारत पर दबाव बनाने की कोशिश करता है। इसका उद्देश्य भारत को उसकी सीमा पर कमजोर करना और उसकी सामरिक स्वतंत्रता को सीमित करना है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य:भारत-चीन गतिरोध का प्रभाव वैश्विक राजनीति पर भी पड़ता है। अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश भारत के पक्ष में हैं, जबकि चीन रूस और पाकिस्तान के साथ अपने संबंध मजबूत कर रहा है।

भारत-चीन सीमा विवाद के प्रभाव हिमालयी गतिरोध के प्रभाव

भू-राजनीतिक प्रभाव भारत-चीन सीमा विवाद ने एशिया की भू-राजनीतिक स्थिरता को प्रभावित किया है। भारत और चीन के विवाद अपने पड़ोसी देशों नेपाल, भूटान और बांग्लादेश जैसे देशों की विदेश नीति को प्रभावित करता है। भारत-चीन के बीच बढ़ते तनाव का प्रभाव पूरे दक्षिण एशिया पर पड़ता है। यह क्षेत्रीय अस्थिरता के लिए खतरा पैदा करता है। क्त्रसीमा विवाद क्षेत्रीय संगठनों पर प्रभावित किया है शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और ब्रिक्स जैसे मंचों पर भारत और चीन के बीच सहयोग को जटिल बनाया है।

सीमा पर तनाव के कारण आर्थिक प्रभाव व्यापार और निवेश में गिरावट द्विपक्षीय व्यापार संबंध प्रभावित होते हैं। वही प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता भी एक वज़ह है विवादित क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन सीमित हो गया है।

सीमा सैन्य रणनीतियाँ और बढ़ती रक्षा तैयारी सीमा पर तनाव के कारण दोनों देशों की सेनाओं की तैनाती और सैन्य अभ्यास बढ़ गए हैं। भारत ने अपने उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों और हिमालयी क्षेत्र में सैन्य सामान की तैनाती में वृद्धि की है, जिससे रक्षा बजट पर दबाव पड़ता है, जिससे आर्थिक विकास को प्रभावित करता है।भारत और चीन के बीच लंबे समय से जारी सीमा विवाद ने दोनों देशों को अपनी सैन्य रणनीतियों और रक्षा तैयारी को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है। लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश, और सिक्किम जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में बढ़ते तनाव के कारण दोनों देश अपनी ताकत को आधुनिक बनाने और रणनीतिक दृष्टिकोण से सुधारने में जुटे हुए हैं। भारत की सैन्य रणनीतियाँ और तैयारी बुनियादी ढांचे का विकास भारत ने सीमा के पास सड़क, पुल, और हवाई पट्टियों का तेजी से निर्माण शुरू किया है ताकि सैनिकों और सैन्य उपकरणों की त्वरित तैनाती सुनिश्चित की जा सके। बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन (BRO) द्वारा लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के पास कई रणनीतिक परियोजनाएँ पूरी की गई हैं, जैसे दारबुक-श्योक-दौलत बेग ओल्डी (DSDBO) सड़क। सैन्य तैनाती भारतीय सेना ने पर्वतीय क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रशिक्षित सैनिकों और आधुनिक सैन्य उपकरणों को तैनात किया है। थल सेना, वायु सेना और नौसेना के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया गया है ताकि संकट की स्थिति में तुरंत कार्रवाई हो सके। वही भारत ने सीमा पर तैनात सैनिकों के लिए उन्नत हथियार, मिसाइल सिस्टम, और युद्धक विमान जैसे राफेल को शामिल किया है। स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए DRDO (रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन) द्वारा नए हथियार प्रणाली विकसित किए जा रहे हैं। लांचपर निगरानी और खुफिया प्रणाली के साथ भारत ने सीमा पर निगरानी के लिए ड्रोन, सैटेलाइट इमेजरी, और आधुनिक रडार सिस्टम तैनात किए हैं।सूचना एकत्रित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस सिस्टम और साइबर सुरक्षा पर भी जोर दिया गया है।

संयुक्त सैन्य अभ्यास भी भारत ने अमेरिका, जापान, और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ "QUAD" गठबंधन को मजबूत किया है और नियमित रूप से मल्टीनेशनल सैन्य अभ्यासों में भाग लिया है।ये अभ्यास चीन के आक्रामक रुख का सामना करने के लिए भारत की रणनीतिक क्षमताओं को बढ़ाते हैं।

चीन की सैन्य रणनीतियाँ और तैयारी

बुनियादी ढाँचे में निवेश: ”चीन ने एलएसी के पास तेजी से सड़कों, रेलवे लाइनों और हवाई पट्टियों का निर्माण किया है। तिब्बत क्षेत्र में 5G नेटवर्क का विकास किया गया है, जिससे संचार और निगरानी प्रणाली को मजबूत किया गया है। चीन ने ल्हासा-शिगात्से रेलवे लाइन को आगे बढ़ाते हुए भारत की सीमा तक पहुँचने वाले रेल नेटवर्क का विस्तार किया है।” *अत्याधुनिक सैन्य उपकरणों का उपयोग:*चीन ने हाइपरसोनिक मिसाइलों, स्वचालित ड्रोन, और साइबर वारफेयर तकनीकों को अपने सैन्य अभियान में शामिल किया है। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) ने टैंक, तोपखाने, और वायु रक्षा प्रणाली को एल.ए.सी. के पास तैनात किया है।
*तिब्बत क्षेत्र में सैन्य शक्ति :*चीन ने तिब्बत में कई सैनिक ठिकानों का निर्माण किया है और ऊँचाई वाले क्षेत्रों में लड़ाई के लिए प्रशिक्षित सैनिकों को तैनात किया है। चीन ने अपनी वायु सेना को मजबूत करने के लिए अत्याधुनिक फाइटर जेट, जैसे जे-20 स्टील्थ फाइटर जेट, को सीमा के पास तैनात किया है। *मनोवैज्ञानिक और साइबर युद्ध:*चीन भारत के खिलाफ मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने के लिए सीमा पर झड़पों और सैनिकों की तैनाती में वृद्धि करता है।साइबर युद्ध में चीन की क्षमताएँ अत्यधिक उन्नत हैं, और उसने भारत की महत्वपूर्ण संरचनाओं को निशाना बनाने के प्रयास किए हैं। *सैन्य अभ्यास और रणनीतिक साझेदारी:*चीन ने रूस और पाकिस्तान जैसे देशों के साथ सैन्य अभ्यास को बढ़ावा दिया है।“बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव" (BRI) के तहत चीन ने दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए सामरिक साझेदारी को मजबूत किया है।

*सीमा पर बढ़ती तनाव की स्थिति: "*भारत और चीन दोनों ने एलएसी पर अपने सैन्य बलों को मजबूत किया है, जिससे तनाव बढ़ गया है। 2020 के गलवान घाटी संघर्ष के बाद दोनों देशों ने अपने-अपने क्षेत्रों में सैनिकों की संख्या में वृद्धि की है। चीन के आक्रामक रवैये और भारत के आत्मरक्षा के प्रयासों के कारण सीमा पर स्थिरता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है।"(मेमन;2020)
विवादित क्षेत्र में संघर्ष की संभावना: सीमा विवाद के चलते छोटे-छोटे संघर्ष और टकराव की घटनाएँ घटती रहती हैं, जिससे दोनों देशों के सैनिकों की जान की जोखिम बनी रहती है। लद्दाख में 2020 में हुई हिंसक झड़प इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

भारत-चीन संबंधों में असंतुलन

चीनी नीति निर्माता भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में देखने में संकोच करते रहे हैं। भारत ने चीन को एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्वीकार किया, लेकिन चीन ने भारत को केवल एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में देखा। इस असंतुलन के कारण भारत और चीन के संबंधों में समस्याएँ उत्पन्न हुई।

रणनीतिक दृष्टिकोण में भिन्नता पाई जाती है भारत चीन को एक प्रतिस्पर्धी शक्ति के रूप में देखता है, जबकि चीन भारत को अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं में प्रमुख स्थान नहीं देता।भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सदस्यता के लिए चीन का समर्थन किया, लेकिन चीन ने भारत के प्रयासों का समर्थन नहीं किया। दूसरी तरफ भारत-चीन व्यापार असंतुलन भारत के लिए चिंता का विषय बना हुआ है।भारत में चीनी वस्तुओं का बड़ा बाजार है, लेकिन भारत की निर्यात क्षमता सीमित है। वही वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका को चीन ने सीमित करने की कोशिश की, उदाहरण के लिए NSG (Nuclear Suppliers Group) में भारत की सदस्यता का विरोध किया।

भारत के दृष्टिकोण से चीन की विदेश नीति

"भारत और चीन, एशिया की दो सबसे बड़ी उभरती शक्तियाँ, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक रूप से गहराई से जुड़े हुए हैं। जहां भारतीय विदेश नीति का विकास ऐतिहासिक, भू-राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधी कारकों से प्रभावित हुआ है।"(बाजपाई;2023) भारत ने अपने स्वतंत्रता के बाद से एक स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति बनाए रखने की कोशिश की है। हालांकि, बदलते वैश्विक परिदृश्य और क्षेत्रीय गतिशीलता के कारण भारत को समय-समय पर अपनी रणनीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता महसूस हुई। "चीन के बढ़ते प्रभाव और अमेरिका के साथ उसके बदलते संबंधों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति को समझना आवश्यक है। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई। इसका उद्देश्य शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के दो ध्रुवीय गुटों में से किसी एक के साथ सीधे तौर पर न जुड़ना था। भारत ने संयुक्त राष्ट्र (UN), गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM), और पंचशील सिद्धांतों के माध्यम से एक स्वतंत्र नीति अपनाने का प्रयास किया।" (शौरी;2011) हालांकि, 1991 में सोवियत संघ के पतन और वैश्वीकरण की प्रक्रिया के तेजी परस्थिति बदल गई। हालांकि, उनके विदेश नीति के दृष्टिकोण में अंतर दिखाई देता है। "चीन ने अपनी विदेश नीति में ऐतिहासिक रूप से "ताओ गुआंग यांग हुई" ("शांत रहो और ताकत बढ़ाओ") की नीति अपनाई थी, लेकिन 2008 के बाद से वैश्विक परिस्थितियों और अपनी आर्थिक शक्ति के विस्तार के चलते उसने "फे न फा यू वेई" ("सक्रिय और प्रभावी बनो") की नीति अपनाई। इस बदलाव ने भारत-चीन संबंधों पर गहरा प्रभाव डाला।"(गोखले:2021)

"भारत-चीन संबंधों की प्राथमिकता में अंतर देखा जाता रहा है। "शुरुवाती दिनों में चीन की विदेश नीति में भारत को प्रमुख जगह नहीं मिली , जबकि भारत की विदेश नीति में चीन एक महत्वपूर्ण देश रहा है। 1990 के दशक के अंत से, भारत ने

अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी बढ़ाई, लेकिन चीन के साथ भी संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया। भारत की नीति में बदलाव वाजपेयी सरकार के दौरान परमाणु परीक्षण और अमेरिका से बढ़ते संबंधों से स्पष्ट हुआ। इसके बाद मनमोहन सिंह सरकार ने आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों को संतुलित करने की नीति अपनाई, और मोदी सरकार ने समुद्री रणनीति* को भी प्राथमिकता दी।"(गोखले;2021)

2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद चीन को लगा कि पश्चिमी देश कमजोर हो रहे हैं और उसे अपनी विदेश नीति को अधिक सक्रिय बनाना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप चीन ने अपने पड़ोसी देशों के साथ प्रभावशाली संबंध स्थापित करने की रणनीति अपनाई। शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन ने क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों में अपना प्रभाव बढ़ाने की नीति अपनाई, जो बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI), दक्षिण चीन सागर में बढ़ते दावे और हिंद महासागर में उपस्थिति बढ़ाने के रूप में दिखाई दी। हालांकि चीन की इस नई नीति में भारत को मुख्य रणनीतिक कारक नहीं माना गया। चीनी विद्वानों और नीति निर्माताओं की दृष्टि में भारत को अमेरिका और रूस जैसी वैश्विक शक्तियों के बराबर स्थान नहीं मिला। चीन की विदेश नीति में भारत को एक पड़ोसी और उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में देखा गया, लेकिन रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में नहीं।

चीन की विदेश नीति में भारत की चिंताएँ साफ देखने मिलती है। चीन ने 2008-09 के वित्तीय संकट के बाद अपनी विदेश नीति को अधिक आक्रामक बनाया और वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ा। इस नीति का असर भारत पर कई स्तरों पर पड़ बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) भारत ने इन दोनों परियोजनाओं का विरोध किया क्योंकि यह भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय प्रभाव को प्रभावित करती है। दक्षिण एशिया में चीन का बढ़ता दखल जिसमें नेपाल, श्रीलंका, बांग्लादेश और मालदीव में चीन की आर्थिक और सैन्य गतिविधियाँ भारत के लिए रणनीतिक चिंता का विषय बनीं। सीमा पर तनाव इन क्षेत्रों में 2013 (देपसांग), 2014 (चुमार), और बाद में 2017 (डोकलाम) और 2020 (गलवान) जैसी घटनाओं ने चीन की आक्रामकता को उजागर किया।

भारत की विदेश नीति का नया दृष्टिकोण

भारत ने अपनी विदेश नीति में चीन की चुनौतियों का सामना करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए है।भारत की विदेश नीति की समीक्षा चीन की तुलना में पहले शुरू हो चुकी थी। 1990 के दशक के बाद से भारत ने अपनी विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए, विशेष रूप से रणनीतिक साझेदारिया के तहत अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय संघ के साथ रक्षा और आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना।दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों (ASEAN) और BIMSTEC जैसे क्षेत्रीय समूहों के साथ सहयोग बढ़ाना।रणनीतिक गठबंधन और मल्टी-अलाइनमेंट में भारत ने अमेरिका, यूरोप और रूस के साथ संतुलित संबंध बनाए रखना, ताकि चीन के प्रभाव को नियंत्रित किया जा सके।

आर्थिक रणनीति के तहत चीन पर व्यापारिक निर्भरता कम करने के लिए "आत्मनिर्भर भारत" अभियान को बढ़ावा देना जिसमें घरेलू उत्पादों को बढ़ावा दिया जाने कि कोशिश शुरू की गई। चीनी निवेश और प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण रखते हुए घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहन देना, 2020 में भारत ने कई चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाया और 5G तकनीक में चीनी कंपनियों की भागीदारी को सीमित किया। नेपाल और भूटान जैसे पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देकर चीन के प्रभाव को कमजोर करना हैं।

"1990 के दशक में भारत ने अपनी गुटनिरपेक्ष नीति में बदलाव कर अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ रणनीतिक सहयोग बढ़ाया। परमाणु परीक्षण और रणनीतिक सहयोग – 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने परमाणु परीक्षण किया और इसके बाद अमेरिका के साथ संबंध मजबूत हुए।मनमोहन सिंह काल में भारत-अमेरिका संबंध – 2005 में भारत और अमेरिका के बीच नागरिक परमाणु समझौता हुआ, जिससे भारत ने वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत की। मोदी सरकार की विदेश नीति – नरेंद्र मोदी

के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय हुई। भारत ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड (QUAD) समूह को मजबूत किया। भारत ने चीन के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने की कोशिश की, लेकिन चीन के कुछ कदमों ने भारत को सावधान कर दिया। उदाहरण के लिए, BRI और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) ने भारत की संप्रभुता पर प्रश्नचिह्न लगाया।

6. निष्कर्ष

भारत-चीन सीमा विवाद ने भारत की सुरक्षा और कूटनीतिक नीति को काफी से प्रभावित किया है। जहाँ एक ओर भारत को अपनी सैन्य और आर्थिक ताकत को बढ़ाने की आवश्यकता महसूस हुई, वहीं दूसरी ओर उसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चीन के आक्रामक रवैये का सामना करता रहा । भारत ने अपनी सुरक्षा और कूटनीतिक नीति में जो बदलाव किए हैं, वे इस बात का संकेत करता हैं कि यह विवाद न केवल क्षेत्रीय, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। भविष्य में, भारत को अपनी सुरक्षा और कूटनीति को संतुलित करते हुए शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए कड़े कदम उठाने होंगे। देखा जाए तो भारत-चीन सीमा विवाद एक जटिल, बहुआयामी मुद्दा और दीर्घकालिक समस्या है। इस विवाद को सुलझाने के लिए आपसी संवाद, क्षेत्रीय सहयोग, और वैश्विक मंचों पर साझेदारी की आवश्यकता है। विवादित क्षेत्रों में स्थायी समाधान केवल शांतिपूर्ण वार्ता और सामरिक समझौते से ही संभव है हिमालयी क्षेत्र में स्थिरता और शांति सुनिश्चित करना भारत और चीन दोनों के हित में है। जिसमें सीमा विवाद, जल संसाधन, तिब्बत का मुद्दा और सामरिक हित शामिल हैं। यह संघर्ष न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि पूरे एशिया और विश्व राजनीति के लिए भी महत्वपूर्ण है। यह विवाद न केवल दोनों देशों के आपसी संबंधों को चुनौती देता है, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता पर भी प्रभाव डालता है। हालांकि, इस गतिरोध के दीर्घकालिक समाधान के लिए एक संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण आवश्यक है। इसके समाधान के लिए दीर्घकालिक और स्थायी उपायों की आवश्यकता है, जिसमें कूटनीति, आपसी विश्वास और क्षेत्रीय सहयोग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

हिमालय क्षेत्र कई विभिन्न कारकों से प्रभावित होती रही है । वही भारत की विदेश नीति ने बदलते समय के साथ इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कूटनीतिक, सैन्य और आर्थिक रणनीतियों का उपयोग किया जा सकता है। भारत और चीन को सीमा विवाद के समाधान के लिए एक स्पष्ट सीमांकन प्रक्रिया शुरू करनी चाहिए। इसके लिए नियमित कूटनीतिक वार्ता और उच्चस्तरीय बैठकों का आयोजन होना चाहिए। दोनों पक्षों को पारदर्शिता और विश्वास का निर्माण करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता का भी उपयोग करना चाहिए।सीमा पर सैन्य तनाव को कम करने के लिए दोनों देशों को "नो-आर्म्ड-पैट्रोल" जैसी सहमतियों पर काम करना चाहिए। संयुक्त सैन्य अभ्यास और विश्वास-निर्माण के उपाय (CBM) को बढ़ावा दिया जा सकता है।

भारत और चीन को विवादित मुद्दों से परे आर्थिक और वाणिज्यिक संबंधों को मजबूती प्रदान करनी चाहिए। आर्थिक सहयोग से आपसी निर्भरता बढ़ेगी, जिससे विवाद सुलझाने की प्रेरणा मिलेगी।भारत को अपनी सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे, सड़क, रेल और दूरसंचार नेटवर्क का विस्तार करना चाहिए, ताकि रणनीतिक संतुलन स्थापित हो सके। यह न केवल सुरक्षा को बढ़ाएगा, बल्कि स्थानीय विकास को भी प्रोत्साहित करेगा।

भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों, जैसे कि BRICS, SCO और संयुक्त राष्ट्र का उपयोग करते हुए चीन के साथ सकारात्मक वार्ता और सहयोग का वातावरण बनाना चाहिए।भारत-चीन सीमा विवाद का समाधान केवल सैन्य और कूटनीतिक उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए एक समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें विकास, संवाद और सहयोग का समन्वय हो। भारत को अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाते हुए अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करनी चाहिए और पड़ोसी देशों के साथ स्थिर और सकारात्मक संबंध स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। इससे न केवल भारत और चीन के संबंधों में सुधार होगा, बल्कि एशिया और विश्व में शांति और स्थिरता को भी बढ़ावा मिलेगा।

संदर्भ

Bajpaee, C. (2015). China-India: Regional Dimensions of the Bilateral Relationship. Strategic Studies Quarterly, 9(4), 108–145. http://www.jstor.org/stable/26271280

Bedi, S. (2021). China-India: The Himalayan Border Dispute. In: Kocsis, M. (eds) Global Encyclopedia of Territorial Rights. Springer, Cham. https://doi.org/10.1007/978-3-319-68846-6_616-1

गोखले, वी.(2024), "सीमा पर स्थिरता: गलवान के बाद की परिस्थिति में आगे बढ़ने का एक संभावित रास्ता", कार्नेगी इंडिया, नई दिल्ली. https://carnegieendowment.org/research/2024/04/missingslug-92095?lang=hi&center=india

Gokhale, V.(2021). "The Road from Galwan: The Future of India-China Relations" Carnegie India , Washington DC USA
https://carnegieendowment.org/research/2021/03/the-road-from-galwan-the-future-of-india-china-relations?lang=en

कल्हा, आर.एस. (2022). भारत-चीन सीमा मुद्दे . प्रभात प्रकाशन.
कल्हा, र. स. (2022). भारत-चीन सीमा मुद्दे. प्रभात प्रकाशन.